## पद १५४

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

कां रे मना हरिनाम न स्मरसी। लोभ लालूच ममतेमध्यें मरसी।।ध्रु.।। करिशील वाचे कोणाची निंदा। हरिभजना मागें कां सरसी।।१।। रिक्षलें कोणीं गर्भवासी तुज। अरे मना मूढा तया विसरसी।।२।। माणिक म्हणे मना सावध हाउनि। जाय गुरूसी शरण त्वेरंसी।।३।।